रात्रि क्लास 27-6-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

आबू की प्रदर्शनी पूरी हुई। बच्चों ने बहुत ही दिल व जान, सिक व प्रेम से सर्विस की हैं। पतित दुनिया को पावन बनाने तुम मेहनत करते हो। पवित्रता है फर्स्ट। बुलाते भी हैं हे पतित-पावन आओ। आकर पावन बनाओ। जैसे वह है कुम्भ का मेला आर्टीफिसीयल, यह है रीयल। सच्च2 पावन बनना है पावन दुनिया के लिए। वह सभी है भक्ति-मार्ग। यह है पावन बनने का एक ही अन्तिम जन्म। यह मृत्युलोक है। मृत्युलोक का अन्त, अमरलोक का आदि। यह तो तुम समझते हो जो बाप के पास आते हो। तुम ही सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जानते हो। दुनिया जानती नहीं कलियुग का अंत है। बच्चे तो जानते हैं यह है पुरुषोत्तम संगम युग। और संगम-युग को पुरुषोत्तम नहीं कह सकते। क्योंकि कलाएं कम होती जाती है। कलियुग के बाद सतयुग आना है इसलिए पुरुषोत्तम संगम युग जरूर चाहिए। सतयुग में है पुरुषोत्तम। मनुष्य जानते हैं देवी-देवताएं उत्तम हैं। इसलिए जो कनिष्ट हैं उनको नमन करते हैं। अभी तुम बच्चों को पक्का निश्चय है हम मनुष्य से देवता बनने आते हैं। मनुष्य दैवी गुणों वाला बनते हैं तो देवता कहा जाता है। अच्छे गुणों वाले मनुष्य होते हैं तो कहते हैं यह तो जैसे देवता है। तो वह हो जाता है अल्प काल के लिए। तुम 21 जन्मों के लिए बेहद के बाप से बेहद सुख का वरसा पाते हो। नाम ही है स्वर्ग। हैविन। भारत को सच्च-खण्ड भी कहते हैं, झूठ-खण्ड भी कहते हैं। बाप आते हैं बच्चों को मीठा बनाने। घड़ी2 कहते रहते हैं मीठे बच्चे। मीठे-मीठे करते मीठा देवता बना ही देते हैं। इस समय तुम बच्चे जानते हो हम ईश्वरीय परिवार में हैं। असुर है नहीं। निश्चय है हम ईश्वरीय परिवार के हैं। वरसा मिलता है। घाटे वा संशय की बात ही नहीं। परन्तु माया संशय में लाती है। इसलिए युद्ध चलती है निश्चय और संशय की। लड़ाई चलती है माया की। वह है रावण सम्प्रदाय यह है राम सम्प्रदाय। बच्चों को यह निश्चय है यह पुरानी दुनिया है। इनको बुधि से निकालना ही है। अभी पुरानी दुनिया से वैराग्य है। नई दुनिया से प्यार है। सन्यासियों का है हद का सन्यास। तुम्हारा है बेहद का सन्यास। बुधि में है यह पुरानी दुनिया है। हमको नई दुनिया में जाना है। बाप ही पढ़ाते हैं। तुम बच्चों को तो नई दुनिया चाहिए रहने लिए। इनका फिर विनाश होता है। देवता धर्म पुरानी दुनिया में होता नहीं।

मीठे-मीठे बच्चों को घड़ी2 सावधान करते रहते हैं कहां माया संशय में न लावे। बाप एक ही बात कहते हैं मीठे बच्चों बेहद के बाप को तुम दुःख में याद करते हो। हे भगवान हाय राम रहम करो। सभी कहते हैं। जहां भी जाओ हंगाम मौत लड़ाई झगड़े ही है। तो जरूर जोर से याद करेंगे ना। बच्चे समझ भीजाते हैं विनाश होता है जरूर स्थापना करने वाला भी कोई है। पहले स्थापना फिर विनाश। त्रिमूर्ति चित्र क्लीयर है। ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया की स्थापना। तुम बच्चों को नशा रहता है हम जो नई दुनिया स्थापन कर रहे हैं। और ऐसे थोड़े ही समझते हैं। वह तो अपने राजा के लिए लड़ते हैं। हमारा किंग तो कोई है नहीं। हां जो रास्ता बताते हैं हम उनके मददगार हैं। अभी तुम पुजारी से पूज्य देवता बन रहे हो। पुजारी असुर, पूज्य देवता। पूज्य देवताओं के आगे पुजारी असुर जाते हैं। सतयुग में ऐसे होता नहीं। सतयुग में पुरानी दुनिया की कोई नालेज नहीं होती। अभी तुम संगम पर हो। तुम पुरानी दुनिया और नई दुनिया को अच्छी रीत जानते हो। भक्ति में है झूठ। उनको कहा जाता है रावण राज्य। एक दो में लड़ते ही रहते हैं। असुर हैं निर्धनके आरफन हैं। उस प्यार से बाप को याद नहीं कर सकते हैं। तुम जानते हो बाबा आया हुआ है हमको वरसा दे रहे हैं। लव जाता है। वह तो बाप को जानते ही नहीं। निराकार को लव कैसे करें इसलिए लव देवताओं तरफ चला जाता है। यह है रूहानी लव। रूह अपने सुप्रीमरूह बाप को लव करती है। रूहानी बाप पढ़ाते हैं। यह बातें कोई शास्त्रों में नहीं हैं। तुम पढ़ते रहते हो। भगवान के महावाक्य तुम नोट करते हो। फिर क्या होता है कोई पूजते करते थोड़े ही हो। ऐसे ही पैंक देते हो। यह पढ़ाई है। इनको कहा जाता है महावाक्य। वह दिल में धारण करना है। सिर्फ धारणा के लिए नोट करते हो। धारणा हुई फिर पद मिल गया। फिर नोट क्या करेंगे।

यह अभी तुम सुनते हो फिर प्रायः लोप हो जाता। बाप ही कल्प2 आकर पढ़ाते हैं। और पद प्राप्त कराते हैं। बड़ी बात भी नहीं। कितना सहज ज्ञान है। उस पढ़ाई में तो माथा ही फिर जाता। यह बहुत सहज है। बाप को और सृष्टि चक्र को जानना है। और पवित्र भी रहना है। अपने को आत्मा समझते रहो। यह शरीर पहले था नहीं। फिर इस मण्डवे में यह शरीर लिया है। यही बेहद का मण्डवा स्टेज है। इसमें यह सूर्य-चान्द बत्तियां हैं। इनको कह देते सूर्य देवता चन्द्रमा देवता। अभी देवतायें तो हो न सके। देवतायें हैं सूक्ष्मवतन में। फिर है सतयुग में। बाकी यह तो रोशनी देने वाले हैं। भक्ति-मार्ग में उनको भी पूजते हैं। यह है ज्ञान-सूर्य। वह फिर उस सूर्य को पूजते हैं जल आद देते हैं। यह सभी हैं बेसमझ की भक्ति। इतनी बरसात कैसे पड़ती है। यह फिर उनको जल देते हैं। क्या2 करते रहते हैं। यहां भी हनुमान का मंदिर है ना। एक दिन एक्सीडेन्ट हुआ, कोई ने कहा यहां हनुमान का मंदिर बनाओ। नहीं तो एक्सीडेन्ट आद होते रहेंगे। बस बना दिया। आते2 कितना बढ़ते गये हैं। भक्ति मार्ग का कितना प्रभाव है। बहुत बड़ा झाड़ है। तुम्हारा ज्ञान है बीज। अभी है भारत पर राहू की दशा। बाप आकर भारत को बृहस्पत की दशा में ले जाते हैं। बच्चे जो भी आते हैं कोई भी बात दिल में होय यह यह बाबा से पूछेंगे। परन्तु यहां सुनते2 प्रश्न ही उड़ जाते हैं। बेहद के बाप से बेहद का वरसा तो जरूर मिलता है। फिर उसमें चाहिए दैवी गुण। और कोई बात ही नहीं। तुम्हारी एक आबजेक्ट ही यह है। दैवी गुण जरूर है। कोई बीड़ी पीते होंगे, कोई शराब पीते होंगे। जितना2 दैवी गुण धारण करेंगे उतना तुम्हारा ही फायदा। दैवीगुण धारण न करेंगे तो पद भी ऊंच नहीं पावेंगे। बाप आते हैं पुरुषार्थ कराने पढ़ाने। तो पुरुषार्थ करना चाहिए। घाटा न डालना चाहिए। बाबा ने समझा विनाश होता है जल्दी सभी दे देवें। तुम बच्चे भी समझते हो यहां बहुत समय तो रहने का नहीं है। देखते भी हो। पढ़ाई पूरी तो होगी ना। बहुत बहुत गई ... अभी के महावाक्य हैं। ऐसे मत समझो कहते रहते हैं मौत तो होता नहीं। अज्ञान नींद में सोये रहेंगे। विनाश काले विप्रीत बुधि है ना। तुम्हारी है बाप से प्रीत बुधि। बाप को तुम दिल से प्यार करते हो। बाप भी तुमको दिल से प्यार करते हैं। इस समय कमाई करते रहो। 21 जन्म की कमाई है। गफलत मत करो। संग ब्राह्मणों का करो कुसंग शुद्रों का करो। टाईम बाकी थोड़ा बचा हुआ है। अच्छा बच्चों को गुडनाईट और नमस्ते।

रात्रि क्लास 28-6-68 :- बाप-दादा पूछते हैं अपने को स्वदर्शनचक्र-धारी कौन समझते हैं। क्योंकि ल0ना0 बनने का है ना। कृष्ण को देते हैं स्वदर्शन-चक्र। राधे को नहीं देखेंगे। राधे के लिए नहीं कहेंगे अकासुर बकासुर आद को मारा। भला यह क्यों? सिर्फ कृष्ण को ही दिया है राधे को क्यों नहीं देते? उनको वास्तव में स्वदर्शन-चक्र-धारी का अर्थ का ही पता नहीं है क्योंकि स्वदर्शनचक्र दिया है देवताओं को। हो वास्तव में तुम। निराकार भगवान ने ही आकर तुमको स्वदर्शनचक्र-धारी बनाया है। और कोई ऐसे प्रश्न पूछ न सके। कोई2 को किस न किस पायन्ट वा बात में संशय रहता है। मुख्य बात है परमपिता परमात्मा बाप है तो उनको कोई भी बात में संशय न होना चाहिए। निश्चय में ही विजय है। जिनको संशय है वह स्वर्ग में नहीं आवेंगे? वह भी आवेंगे। फिर भी मुरली तो सुनते हैं ना। तुम्हारी प्रजा बहुत ढेर के ढेर बन रही है। म्युजियम प्रदर्शनी से बहुत प्रजा बनती है। सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी प्रजा, यहां बननी है। बच्चों से पूछा जाये किसके पास आये हो, तो कहेंगे शिव बाबा के पास। शिव तो है निराकार। निराकार पास कैसे जावेंगे। वह तो शरीर छोड़ मुक्ति धाम जावेंगे। अभी तुम समझते वह भी भाग्यशाली रथ पर आते हैं। भाग्यशाली रथ मनुष्य का ही होगा। बैल को थोड़े ही भाग्यशाली कहेंगे। बाप कहते हैं तुम पदमापदम भाग्यशाली हो। तुम देवतायें बनते हो। देवताओं को पदम की निशानी देते हैं। तुम बच्चों को भी यह समझना है मर्तबे में बहुत फर्क है। ऊंच मर्तबा कैसे प्राप्त करेंगे। वह है पढ़ाई पर। शिव बाबा डायरेक्शन देते हैं यह यह बनाओ। बहुत बच्चे आकर मेरे से ज्ञान लेंगे। तो शिव बाबा ब्रह्मा को डायरेक्शन देंगे या तुम बच्चों को डायरेक्शन देंगे। पूना में भी अच्छा सेन्टर चाहिए। कोई से मांगना

28/6/68 M

न है। कहते हैं मांगने सिवाय कोई देता नहीं। बाप कहते हैं मांगने से मरना भला। मांगना ठीक नहीं है। सभी को ओना है तो ना हम अपनी राजधानी अपने लिए स्थापन कर रहे हैं। आपे ही मदद करेंगे। ड्रामा में नूंधहै। मांगना ठीक नहीं है। ड्रामा में कोई बच्चे राईट कदम को कोई रांग कदम उठा लेते हैं। बाप समझाते हैं राईट कदम उठाओ। चन्दा-चिरा न करना है। दिया एक दो को सुनाया आधा ताकत चली जाती है। बाप गुप्त है ज्ञान भी गुप्त है। हरेक बाप गुप्त है। हम ब्राह्मण बच्चे आपस में मिलकर ही माकन बनाते हैं। मांगना न है। बाबा कब कोई से मांगा नहीं है। बच्चे तो बहुत हैं। आपे ही चार्जवाले हाथ में दे देते हैं। बाबा हाथ कबरेसे नहीं करते। राजाओं लोग पास कुछ देने जाते थे तो कब हाथ में नहीं लेते थे। गिनियां जाकर भेंट रखते हैं। उनको पता है सेक्रेट्री को लेना है। ईशारा करेगा लियो वा नहीं। खुद हाथ नहीं लगाते हैं। यह भी बाप दाता है तुम बच्चों को भी देते हैं। कबरेसे मत समझो हम शिव बाबा को देते हैं। नहीं। दिल में समझना है हम बाबा से तो महल लेते हैं दो मुठी देकर। सुदामा का मिशाल है ना। बाबा ने तो सिर्फ इसमें प्रवेश किया है। तो यह भी लेते नहीं है। तो यह भी लेते नहीं है। हाथ जैसे उनको हो जाती है। बुधि भी कहती है यह तो सभी खलास हो जाना है। विनाश तो होना ही है। बाबा को बुलाया ही है पुरानी दुनिया से हम को ले जाओ। तो शरीर सहित ले जावेंगा क्या। बाबा आया है जरूर ले जावेंगा। जाना भी जरूर है। नई से पुरानी फिर पुरानी से नई दुनिया बननी है जरूर। तुम बच्चे जानते हो स्थापना होनी ही है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना ... यह तो बहुत ही सहज बात है। सिवाय एक बाप के दूसरे कोई में प्रवेश नहीं करते हैं। और सीधा कहते हैं जिसमें प्रवेश करता हूं यह अपने जन्मों को नहीं जानते हैं। मैं जानता हूं, तुमको बताता हूं। दिल से बात लगती है बरोबर आत्मायें परमात्मा अलग रहे बहुकाल। हम आत्मायें पहले2 आते हैं वही पहले पहल जुदा होते हैं। फिर पहले मिलेंगे। सिध होता है 84 जन्म पूरे वही लेते हैं। बाप खुद कहते हैं ब्राह्मण कुल और सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी स्थापन करता हूं। तीन धर्म पहले ब्राह्मण। फिर वह सूर्यवंशी भी बनते हैं तो चन्द्रवंशी भी बनते हैं। तुम सम्पूर्ण विकारी से फिर सम्पूर्ण निर्विकारी बनते हो। फिर सम्पूर्ण विकारी बनेंगे। दुनिया भी सम्पूर्ण विकारी फिर सम्पूर्ण निर्विकारी बनती है। तुम बच्चों को तो बहुत खुशी होनी चाहिए। तुम पढ़ रहे हो। पढ़ कर पूरा करेंगे फिर ट्रान्सफर हो जावेंगे। यह है वेहद की बात। शिव बाबा साकार तो हो न सके। शरीर तो इनका है ना। बाप कहते हैं मैं इन में प्रवेश करता हूं। तुम लिखते भी हो बाप दादा। तुम संगम पर होरेसे कहते हो फिर कल्प बाद कहेंगे। बच्चों को समझ होनी यह दादा तो कुछ जान भी नहीं सकते। यह तो तुम्हारे जैसा था ना। महिमा इनको कुछ नहीं। महिमा तो एक ही है जो हमको ऐसा बनाते हैं। उनको ही याद करना है। जिस याद से ही पाप भस्म हो जावेंगे। बाप कहते हैं मामेकं ... मनुष्य को भगवान कहना हिरण्यकशिपु ... जैसे असुर हैं। बाप क्लीयर कर बताते हैं मैं इस रथ में आता जिसने अपने 84 जन्मों का चक्र लगाकर पूरा किया है। तुम बच्चों को खुशी होनी चाहिए। कोई भी बात का डर नहीं। जैसे बाप निर्भय हैवैसे बच्चे भी निर्भय। निर्वैर। दुनिया में सभी को एक दो से बैर रहता है। कितना लड़ते-झगड़ते हैं। भारत को अलग किया तो हिन्दु मुसलमानों का वैर पड़ गया। पिछाड़ी में खत की नदी भी भारत में ही बहनी है। उनको कहा जाता हेखुनी नाहक खेल। कोई ने गुनाह थोड़े ही किया है। ढेर प्रजा मरते रहते हैं। नाहक खून इसको कहा जाता है। तुम आत्माओं का प्यार रहता है परमपिता परमात्मा से। न कि शरीर से। आत्मा हमारा भाई भृकुटि के बीच में रहती है। तो आत्मा को देखना चाहिए भृकुटि के बीच में। यह भी प्रैक्टीस करनी पड़े। आत्मा बाप को देखती है। बाप बच्चों को देखते हैं। बाप को देखते2 याद करते2 पाप कट जावेंगे। जैसे ज्ञान का सागर बनते हैं तुम भी बनते हो। और कोई फर्क थोड़े ही है। आत्मा वही छोटी सतोप्रधान बनती है। कृष्ण भी पढ़ाई से यह बना है ना। आत्मा तो वही है ना। वही पुर आत्मा होने से उनमें कशिश है। सभी को खेंचते हैं। अच्छा बच्चों को गुडनाईट और नमस्ते।